

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ २ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ३ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ४ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ५ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ६ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ७ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ८ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ९ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १० ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ११ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १२ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १३ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १४ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १५ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १६ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १७ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १८ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १९ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ २० ॥

वप्रदप्रज्ञा ॥ ॥ नागात्रसूत्रज्ञे ॥ ॥ तव ॥ ॥ माधवकृष्णमि
 लुगुवात्रा ॥ ॥ याताञ्चत्रयज्ञे ॥ ॥ सत्तमप्रस्थवित्रे ॥ ॥ सद्दत्रानेद
 प्रमुखेर्मदिते ॥ ॥

नागा ॥ ॥ ताल ॥ ॥ स्वर्हमित्रिनाज्ञ ॥ ॥ तलसत्राज्ञ ॥ ॥ हानिञ्चय्या
 सहविलसिते ॥ ॥ यज्ञामि ॥ ॥ यागमन्त्रतवचत्रयकमला ॥ ॥ क्र ॥
 पुरुन्दकाननं दिव्यनिलाग्रनं ॥ ॥ विष्णुपविघ्नमकत्रययधत्रय
 ॥ ॥ जटाशूटमकुटपञ्चजिननाशितं ॥ ॥ विरुतिरुषितधवलव
 यनी ॥ ॥ विष्णुवृत्तकनाथमने ॥ ॥ सवर्त ॥ ॥ प्रहमासिसदात

सप्तमः

२

सनावनस्थसूटिकस्यमेउपसनात्रहेर्गकनमर्वयंती॥ तालप्रयागप्रतिवद्धगीतां॥ सोनीतनूर्नानदहेवीये॥ १॥

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय॥ ॥ तालप्रयागप्रतिवद्धगीतां॥ ॥ त्रुष्टं गमवल
कनकमसिमय नानात्रागनाप्रकालिता २ वज्रुतदीपसंगममध्वमत्र
माय श्रीवज्रसत्त्वगुत्रविजयिया॥ ॥ सुमत्रकीचनमसि कित
समयत्रा एखत्ररूठवित्राजिता २ श्रीगुत्र एखत्रसदृशनाथत्रल
ममुलनिर्यागयामि॥ ॥ प्रथमात्र श्रीगुमधुलत्रविगावत्रलक
मलजितधत्रीया २ त्रैकात्रजागाडीध्वदीया॥ ॥ लत्रप्रतगमश
यैकात्रजागा पूर्वविदहा १

विद्यामिनी विदिशि कीर्तयुष्यं आध्यासमानाप्रिययाचसख्या॥ दिक्कं सनाकं नृदकोविदहा नागप्रक्षनापदी जलीयं॥
वलि वंडकूत्रकूत्रव विविधित्रागना संपूर्ण याउपदीपनाउप दीप त्नाउप
छप बंडपदीपी॥ ॥ गजत्रागना पूरप्ररागना त्रुष्टत्रागना स्त्रीराग
ना २ खजुत्रागना ससितगाना चक्रत्रागना बासर्वनिधनसंपूर्ण ॥ १ ॥
तागपदीजलि ताल ॥ ॥ त्रुनीलत्रनलजलशोवतमाय २ मत्रमधुल
वक्रताया २ वज्रपीजत्रसंज्ञासंप्रत प्रेतिहेतिहेतुवताया॥
दाभात्रजत्रयिया॥ ॥ धूनाकत्रलत्रालिंग एहत्रवक्रत्रयिया २ वक्रवात्र

त्रुष्टं गमवल १ दिव

त्रुनीय २

हिन्ना लिंगा ससम्बन्धप्रयिया २ कुतिसवित्रीवित्रध्वप्रहिङ्गहिताहिताहि
 त्रुष्टमभने २ त्रुहतासर्वदववडायादधादिगीमत्रतिवैनसैरावे २
 प्रिपुवनपुक्तनूकग्रायएरागो २ प्रिपुवनपुक्तनूकवीरा २ प्रिनिधुन
 नवनाथध्वप्रसादिताहलिंगागानुकाकाल २ त्रुहिनिशीसतागुत्रव
 त्रापुत्राग-कूदिगात्ररावन्नरावे २ ज्ञानासत्रसरायवधनभावयह्य
 भात्रगागनसैरावे ॥ २ ॥ **नगरेश्वरवितालइडमना** ॥

कलध्वन २

कलध्वनविधिप्रश्नयहाना पूजायामिदेववास्त २ विविधिउग्रहा
 तनृत्पगीवत-उमत्रेध्वनिमर्मगला २ उं वडा मृतायकर्मजा
 किनिममरावकुलावकत्रुधयनूप गलसुत्रहिशीत्रैवमिमहाकात्र
 उं सुप्रतिष्ठितावकस्त्राहा २ कनकत्रुधमसिताननत्रविताघापशुप्र
 ध्ववडपल्लहिता २ पञ्चमृतायवतान-पञ्चाध्विपैववीहितिध्व
 दक २ लाज्ञान्नज्ञाद्वीकुधुलसहिता वज्ञान्नवार्यमैग्रन्याध-जाकिनी

ॐ
रुनी
५६

लोभाखुगोहानूपिली विनेवित्रध्वनसैशना २ सतगुनवन कलठमवन
नैत्रिभगसखल्लयागुमहाशनमई २ प्रपुत्रखलुमीकानहाहास्कन
सैशना ॥ ३ ॥ **॥ प्रागवसकललित ॥ तालइमान ॥ कृष्णनिललीड**
नर्पिबहानस्वरावा कंकानकनविजसमत्यन्ता २ निवासितामाकात्राहवमान
किसूनसैदतिनवशोवना २ ॥ नमामि **॥ श्रीवान्नसिन्नक्षिवजाम्बु** ॥
प्रकन्नमृतादकं २ **॥ श्रीलीटपदछायदृष्टिमानहनस्थितभकमखपिन**
विलासवठमललितेप्रदिष्टा ॥ १ ॥

२
कवर्ध
५७

यनत्रस्तवर्ध २ नृणादधवाधुध्रिगाधककनवानसनरूपदितियकत्र
पाठर्भकधपप्रधजगदाध ॥ वज्रवतदकप्रथमसर्व २ नृपत्रडध
उज्ज्वलकधन वज्रवेधखदीगकमधुल २ प्रिष्ठलमूत्रवज्रवाहगधरीति
तदनकमाकृत्र २ ॥ **॥ ३ ॥ हंहांकीहकारहनिगवर्धगुक्कन्नमृताकात्र**
रावरीति २ तवकनसमयक्रतामूर्जवान्धी पनमायवडीडतथध्ववि
ता ॥ ४ ॥ **॥ नागनाटक ॥ तालरुपा ॥** त्रकवतसप्रियतामससुन्दनि २ नृ
दुर्नगमस्कीधनिवदृहा स्वर्धप्रहाधमसितस्वर्धगम ॥ संग्रामरुमोविनयंशुतासी नाटायमूककिलवैडवगम ॥ १ ॥

गमकदहनोऽं रोत्र १३

सुहादभुजलनगुकिनः॥ ॥ पुनरुदविवान्नसिमामकिदवि॥ ॥
जगत्प्रभादित्रमयनसुनीता॥ क ॥ अगमवदपूनासवधानि २ श्रीगध
त्रसदीकागुत्रउपदः॥ क ॥ पञ्चवच्चस्वरूपसुगुके २ सहस्रश
गिनित्रेयाहनर्वगुहनूवा॥ क ॥ सगुत्रवतसिनिगातध्रिया २
हनयिवाकवजसूनासूत्रपी॥ क ॥ ॥ नागगीधनरुत्रवि॥ ताल
रुप॥ गमकदहनर्पवज्ञानस्वरूप २ पञ्चमियानसर्ववसानिष्टजिग॥

कथंचिन्नामसिक्ता सगः॥ अथादशेवनी॥ सप्रतिष्ठानाटनागसमृद्धिः॥ हमलोत्रसुलावनं॥

॥ क ॥ पुनरुदववलिनायप्रिगुवनवीत्र॥ वीत्रभतायकसमयानन्द॥ क
॥ क ॥ वीत्रवित्रध्वनसहजानन्दः कनकमलावर्षुदय्यानन्द॥ क
॥ क ॥ पयवच्चपयवज्ञानस्वरूपः देवासूत्रनत्रप्रभादितादय्या॥ क
॥ क ॥ ॐ अरुंकी र्वस्वधनयानि दमनूचध्वनिवीत्रमानन्द॥ क
॥ क ॥ ॥ ॥ नागसुप्रतिष्ठानाटक॥ पुनरुद॥ प्रिदलसुत्राग्रहदि
नकर्म सुलनाजिगप्रिगुवनजननि २ त्रगातकनडलप्रिनिनयनमानव

प्रिदलसुत्राग्रह

पुनरावर्तनी॥ क ॥ देविकनतिकपालधना २ रविननभिनमाला
 २ कमलक लिखि यितात्रवाड यिताच यिसहजसूत्रपिणी॥ क ॥ वकि
 भिनक ६ क धुलक ८० क ० क ८८ मरा २ हा ८० गोवककर्तियाडमयत्र व
 त ६ नूपुरलषणी॥ क ॥ एवपदयानलगाधनक दहिनिहानकना
 या २ एवाएवविवर्जितनूपुरगगलसंनूपिणी॥ क ॥ पदमवजपद
 भिल्लगतधनिया॥ गभवयिहासे क लिखः नूपुरसिद्धिभाजप्रदायनी ७

ठपासामुक्तगीदयितनमाखी कृपादधानासवननमश्चा॥ अनायगंजर्पितवाकलीला वनांगलयंकदुखीप्रदिष्टा॥ १

नमामिश्रीवज्रयागिनी॥ क ॥ १ ॥ **नागकड ॥ तालमा ० ॥** जयवाचुनि
 देवित्रवदविघ्नसमयनसूत्रासूत्रवंदितवत्रभा॥ तलगवतिपाइक मत्रमहि
 मधुतनडनरननकात्रा हा उमाहाउज्ज्वलवितरुषितनडनघ ६ डना
 ना २ गिनिप्रिनिप्रिनगुयनागना॥ ॥ भिन भिसिद्धनभनि ककुलनयन
 कस्तूरिकर्पूररुचिनीबूला॥ क ॥ कनतिकपालधनि मूठमालरुषिता २ की
 खद्वीगिकपालधनि॥ क ॥ एनयिसूत्रावजवा कलिदा ६ श्रीवज्रयागिनि
 वनदप्रसाद॥ क ॥

श्रीवज्रयागिनी

४५॥ मासु कशीमलयदुमाहम मृदुसस्यध्ववसंगमसा ॥ गुणित्वनासीदधमीदिरागं गन्धी कृतादकिधुंजनीयं ॥ १॥

नेमल प्रिल

मे ५

॥ ० ॥ नमल प्रिल सनाह विनाशिता २ प्रि पुवन सवनाचल नुकनूपा ॥
॥ ॥ जाकिनी वन निधिवज वेनावनी ॥ श्रीदवी प्रिष्ठा कनि प्रि हवमाता ॥
नाहिम धुलमाय पुवन ध्वनी २ प्रि नि रुदिनि प्रिनयता २ प्रि नितात्वप्रय
ऊन प्रि हवव्यापिता अखय निनेऊन छागितूया ॥ ॥ पुगुतिमृगुति वन
दहिममाता २ श्रीवज यागिनी पादधन ल्हा ॥ २ ॥ **नागिनाटका**
ल ॥ लान् मी उलमाय कलिाई काता अलिकालि इयिवापयिह

होमम ७ ल १०

नूवा ॥ क ॥ नमामि २ श्रीनिनाल मृगि पुवननाथा ॥ वज्रवाताहिना
लीगल नूदयै ॥ क ॥ कृष्णवर्तव पुर्मख प्रि निनावन विष्वा कलिष्ठा नू
र्ध्वपडाश्ट ॥ क ॥ जाकिनी नामा खं गुनाहानू पिनी वगुनदवी कीद
गिविलासा ॥ क ॥ रुषिताष्ट मूडा कृतीम विनध्वन एतयिन्ननय
मवज हनू वदासा ॥ क ॥ १० ॥ **नागय मंजलि** ॥ **तात्त्व** ॥ मधुल
समयवक्रम धुलसम्पू २ द्वादश पुजवडवान वयन ॥ क ॥ ज्ञान

महोत्तमसभा ११

पुकन ॥ श्रीसम्बतकागिनी २ श्रीयावकुनादवित्रवतानूली ॥ क ॥
 उकिनीलामाखलुनाहानूदिनी २ वानिमानवडवापियात्र ॥ क ॥
 कायवाकविकृतिनीपुवने दानप्रतियाशुहत्रवतानूली ॥ क ॥
 यागयागिनीमेनीसमनसैरावेर नृष्टमममनशीहन्व ॥ क ॥
 ॥ ११ ॥ ~~नागरेनविनालरप~~ पर्वतधगातमनियाने समयाचार्यवि
 ध्वरुलनेरदशदिगादशवतनानूठ एतर्क दानप्रतिपि विघ्ननिनवा

पुवतधगात १२

नून ॥ ॥ ई ई वित वितध्वनवलिदानदहा दानप्रतिशुहत्रवता
 नून ॥ क ॥ पूर्ववेनीवन दक्षिणनल्लसैरवपश्चिमनू मिताहजिनवा
 पियात्र २ डफूत्रनूमाघसिद्धि मायनूकाय वानिमानवडवकधपिया
 त्र ॥ ॥ समाधि श्रीसम्बतमाय कालवकुहवज विध्वरुलनेर नाना
 वाधिसुत्वत्राधार्वादमनियान ॥ सिंहनादवाजियान उमनूवाडने नृ
 ष्टयागिनीमनिसिफियान २ उमनूवाडने यात्र ष्टयागिनीमनिया

२ वानिमानवडवापियात्र २

३२ जालन्ध्रिपूजाकर्षपागभवयीया वानिमानवडुच कथयियाप्रा॥ ३३

॥ १२ ॥ त्रागहैत्रवि॥ तालवाडाईमान॥ नमईं आकाशधनुषधनु
 २ शङ्खविह्वलउफ़ाधनुष॥ क ॥ तानाई २ तानातानाई २ धवलस
 संधवदहधनु २ सनदसुहाहियकाशधनुष॥ क ॥ द्वंद्वनालिंगसया
 गहधनु २ वज्रघं ० मडात्रयमनूति॥ क ॥ मायाविह्वलविनिषज
 गु २ साहियवज्रसुखपत्रमधनु॥ क ॥ १३ ॥ त्रागमधमाथ॥

आताउनेशकनकारलोत्रीलतावसानचकितामृगजी॥मृगविधनाप्रमनाप्रकारमधुकनीयंकथितामृनीदेः॥

ताल इति ॥ प्रियकरत्र विष्णुमधुलमाय स्थितित्रानन्द मन्त्र तिधना
वज्रवाना हिन्नालीगधसम्भननानात्रग्निमहाद्वला ॥ ५ ॥ तेनाईतेना
इतनातेनागाईइईइ ॥ नीलवर्धवपुर्वकुप्रतिमखप्रितप्र पत्रमानन्दमन्त्र तिध
ना २ विश्ववज्रभूर्ध्ववैडजटामकूटधना हाउत्रा एन ससुष्ठमरिणा २ वज्र
धै ० गजवर्म उमन्त्र खद्योगधन वीनमानन्दमन्त्र तिधना कनतिकपाल
पत्रमुपाधधनप्रिभूतवृक्षधितेधना २ दिर्गविर्गीकाकाठधमंडमदा

६

नमामि २

१५

ठियात्रि सहजानंदमूत्रति २ नमामिनमामि २ श्रीवक्र सर्वत्र सगुत्रवत्र स
त्रात्राधिता ॥ कृ ॥ १४ ॥ **नागादेवविगायलइमान** ॥ नमामि २ जिन
धगु/कर्तृकचगुत्रमूत्रतित्रालि गिता २ पंचहानपंचधगुस्वरूपावृद्ध
धर्मत्रालयध्वत्रा ॥ गिताई २ जगतसीसातडव नियामनाहत्र ॥ नमामि २ पं
चनिनध्वत्रा ॥ नमामि २ श्रीधर्मतित्रध्वत्र ऋदिसिद्धिवत्रदायनि २ इ
त्रिताहननसर्वपापजयैकतदानपूत्यनुद्गमाजप्रदा ॥ कृ ॥ **नागा** ॥

प्राक्कीशकृत्समनाशी ऊयंतीपूष्यशमनीयं ॥ नंदनवनापकं ॥ ७ ॥ सूनतमनानिवधस्तता ॥ १ ॥

नमामि २ धर्मधगुवागीध्वत्र ॥ घाउठाईवापनिर्म ठिता ॥ घाउठागीत्रधउ
नयूनकात्रा सर्वदवपनिर्म ठिता ॥ नमामि २ वागीध्वत्रमंउलयप्रगि
त्रि निवासिता ॥ सत्वविभाहिताईगीतिनाधनप्रसमा मिजिनवक्रध्वत्रा ॥
॥ क ॥ गिताई ॥ १५ ॥ **नागानिर्देव** ॥ **तालनूकसाध** ॥ वियैवि
धमयमनोहंगसयना ॥ हर्वगुसनावत्रउन्मतिया २ दाठिमकसमसं
काठाठातीतात्रनूपमडनवत्रउन्मतिया ॥ कृ ॥ **वामकनाटकदहिन**

विश्वविधमय १४

कनकजतगनसकट केशिया २ बुक्कलकूत्राहिनवित्राहिनवात्रि॥ श्रीवि
याधत्रिंशत्रयिया २ सूर्यमधुलमाय ३ उदयत्रनीति नीत्रसीहावस्थितिया २
कनकसीहावपिवयित्रनीति थनहनमयंतउन्मगिया २ अथित्रथित्रनहा
यित्रधन्त्र अरुध्वत्रालिनकालिया २ सहजानन्दमहासुखकलियिया
बृहडाकिनिद्वीनकालिया २ कनकसहात्रसृष्टिपुवनकलियिया २ हा
वैपुलावनहायिया २ आदिनत्रैतननिरूपमज्ञाति प्रसमासिहत्रवन

नीलांजननीविहीयधवीनमहीनाकाठानूपवद्रवर्वनर्वकठो॥ उग्रकलत्रयंकनालमखंकयाली
हनयिया॥ १० ॥ त्रागार्गीधनरैत्रवि॥ तालकति॥ उंआहीरुद्रनीस्वाहामं
प्रविष्ठापडवान्न २ पूजापूजितापूजसैरावितल्लवन्नपरुवेगुन॥ क॥
खखखाहिलिवलिपूजानघघघाटयघाटयविघ्नत्रयैवामियानसर्वव
सालिनर्षवदानसर्ववलिना २ सर्वज्ञज्ञताकसहताप्रापिभस्वलेत्रप
सालने २ ठाकठाकिनीइयित्रष्टुठामठामन॥ ००द्वैवलिगृहगृह
पुन २ समयानत्रपुदानपतिन सर्वसुखसंप्रदधर्मीतिन २ जथेवजथेव
धारेनवसकलमातृकाजागनाथः॥ १ ॥

५॥
श्रीगुरुदेव
॥

प्रियाधनसादुनसारिहृदयसुखं दसीमानिरूपयवाप॥ पञ्चकम अविहितापवर्ग सुसुखनि ज्ञानितहमवर्धः

उदिताल १०

पुंरुथजिवधनेजीर्घ ० मातृकारवेपुत्र २ दानयति सर्व कार्य सिद्धि
मनीत्रध सर्वस्वप्रद धर्मिणि २ आन सीसात्रत धागाव यन साहाय
कत्र एवेपुत्र॥ कृ ॥ १० ॥ नागविलास ॥ तालमाथा ॥ उदितालत्र
यपवनधगा २ वनसादामसीकाधनीता ॥ कृ ॥ धानइष्टलय निधभव
निता २ अषयनिर्गतभीरुगाता ॥ कृ ॥ दिनकनसधुलमधग
ता २ सहजामृतत्रसुखकृता ॥ कृ ॥ दग्धन्निरुयप्रतिनिहीता

अ॥
अ॥
अ॥
अ॥
अ॥

२ देवाहनननभनसमिता ॥ कृ ॥ गभर्वतिपवनयनिगुत्रलगता २
वज्रावाताहिगुण्यायभनसमिता ॥ कृ ॥ १४ ॥ नागविलासताल
माथा ॥ कूं कूं कूं कूं कूं कूं देहधन सीसात्रत २ ईदत्रालिंग ललाधन
२ हवजापुष्पागता २ हवजापुष्पागता कूं कूं कूं तनागता २ सुननत्र
वीदितवनसवन २ कसुमविलपनदेहधन २ लावविमाकूट विमहसा २
पुष्पगुलआकाटिया २ नमामि २ श्रीहवजा २ पुष्पगुलआपिधिया

गो॥ क॥ १८ ॥ राग गवैजगिनि॥ **गाल नरामा** ॥ हाउ न्नाहत्तु कि
 यानि तसैवत धनयिकीवा लित्र र सा २ प्रियतायनम भुयाम्भत २ म
 कूटके भदिगं वना॥ क॥ ॥ तने भा नू नू व संवन रेया २ सहज सैद निभा नू को
 ला २ हम विना जि न व डवा नाही २ हृदय महिया यि त सा ना २ भलि लायन
 वत सहमयन कर्षत रुन यि ती वा ला २ गग स नि त व नि त वी धि त शाय २ म न
 मी उल्लू ~~संवन~~ व डवा नाही २ उक्त विनू द धि त्री धना २ गवै गिली ला व डया
 एवली ना २ प्रिय धनू ख डी ला ॥ का दि ला ना सै वत पयि श यि नू न एव ता ना २ हम वि ना कि न १

यिया वल सा गुनू वत ॥ **सा ना ध** २ समय आनी द रु लि ला त मी उल्लू
 वत व डवा नाही॥ २० ॥ राग भाद गिनि॥ **गाल नू काल** ॥ व कि की
 उल्लू की ठी गोच क म पल रु धि त गी व नू उ न त शि त मा ला २ स न व कि
 व कि त्रे या रु स्म वि रु धि त गग स गि नि वी ड नि वा ना॥ क॥ ॥ नै व ठा शि
 ह नू व द भा नू को ता श ला ना ध श्री स म्ब त ना या २ व डक ना रु क हा ॥ थ
 ध त्रि या क ॥ ० दि न डू ख डी ला २ संपू ट श गि नि क म ल वि हा सि ला त

महासुखमनिप्रसादा २ वज्रवाहिना लिंगसर्ववचनावयिवरुबीहरेला
वाङ्मनिकालमिकीर्तिहनुवन्त्रुष्टुव रुतनप्रसादं प्रह्लादालिंग
सहनुवनीलवर्षविलासयिष्ठन्यकनका ॥ २१ ॥ तागहेनवितालद
रुमान ॥ गङ्गाजिनउर्द्धहाथधनिया कमलकुलीशर्जगवाता २ उमनूकन
तिकुभनप्रिष्ठलवामखर्दीगकपालन ॥ २२ ॥ श्रीसम्बतार्यवाङ्मलिपु
म्भर्जवनावने २ मानयिनवापियातिप्रमाया २ सहबधुहनुवतालीना ॥ २३ ॥

गङ्गादिना २२

[illegible]

५
रुद्रावाहनि २३

विष्णु २६

लूनयूनयानिहादहापूतर्क नावधिमाननित्रवाल्तहः-जिनपदयानलेदह
पूतर्कः-जिननननिवडयागिनी ॥ अर्यैअर्यैहाउत्राहृतसुखभला-कनतिक
पालकनधनसी २ अर्यैअर्यैतूडमममनस्थितिगिनिवडनननितनमा
ला २ अर्यैअर्यैलाखडगगतसैसात्रप्रथमामित्रद्वयैवावुति ॥ क ॥ २३ ॥
नागशल्लवर्ध ॥ नालर्गमाथ ॥ दिहुडादिमूखगिनिनयना २ मूकटकेभ
दिगीवना ॥ क ॥ तनात्ता ३ ॥ वामकनोटकदहितकनति २ हाउभाह

विष्णु २७

तलविहृषिता ॥ क ॥ सूर्यमधुलमाय-ताधुवमूत्रतिननभित्तमाल
सुखभरिता ॥ क ॥ सागूत्रवतलभिलगाध त्रिया २ बडावाना हि
मिल्लिगना ॥ क ॥ २४ ॥ नागमालवा नालमा ॥ वडिंधालि
धतालिर्वणालिनि सिंधिनिव्याप्रिसिईवकउत्ताकिनी ॥ क ॥ नमामिथी
यागाम्बनहानवधरी २ पिनिनप्रदवीपिपुवनप्रविळा ॥ पूर्वडफूनयधिमद
जिलदिगादवी २ जकिनीदीपिनिवडसिकसाजिनि ॥ वगुनदिगहुकहल

विद्यालयमन्त्र



... ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ...

ASHA D. WETTER

2845

महाभारतम् । अथ द्रुपद उवाच ॥
 कुरुक्षेत्रे युद्धं भवितुमाप्स्यते ॥
 पाण्डवै रणे हार्यन्ते तस्मात्तु मे
 संशयः पराक्रमी यो वीर्यवान् ॥

नेपुदवीप्रितिनपदवीनाचपुदवी॥ हनिह नवु क ठून्नु नसूनमास २ धाउ
 धयागिनीमित्रसैराव॥ क ॥ २५ ॥ तामागालव॥ तालमाथ॥ प्रकवदन
 तलमकटत्रालीकता नपु पुंजखपु पूरुके अनधनधानी॥ क ॥ नमा
 मिथीमैरुथीपप्रनृपयधना॥ सयत्रनासाधनिप्रनिगधनी॥ क ॥
 दहिनध्यागसपति वातधीमहाकालसगसममुलमाय प्रकलितस्थि
 ता॥ क ॥ २६ ॥ विमैरुननायाविध्वविद्यापिता २ नृहृलयवकृवा

धिरनिहत्रध॥ क ॥ वज्रधनप्रसादित्रदासहनयिया गुनवनसमा
 लिसिद्धिवत्रदा॥ क ॥ २७ ॥ तामागालव॥ तालमाथ॥ पूर्वदि
 गस्थितहैसासनीदेवी वेंडवदनीदेवी धानिगिठला॥ नमामिथीरु
 तवमाप्रिकागसपतिकुमात्रा॥ नृहृरुतवन्नृथ्यागिनित्रालीगता॥
 ताकावदनिल्लभलितमयूत्रासतिदेवी विइपाप्रधानिवेष्वीदेवी॥ क
 वदनधाननूपीवानाहीनूपी कंकुमवदनिरुद्रायनीदेवी॥ क ॥

कनकप्रधानिर्गर्ककान्तमृतिः प्रथमासिद्धी श्रीमहावक्त्रीसगम्भा ॥ ५ ॥
 ॥ २० ॥ त्रिगुणसिद्धिलिङ्गा ॥ त्रिगुणसिद्धिमान् ॥ ॥ अष्टदलसत्राङ्गदहव
 प्रकाशित २ श्रीभक्तमूर्तिवन्दनलोचना ॥ ५ ॥ दहिनवदया
 सिवामकमलपाशिनमासिद्धीधर्मत्रायमहामूर्ति ॥ दहिनद्विजिनिवन्
 वामकीर्तिकापाण्डुविधिग्रीववन्दनतीत्रल्यप्रदा ॥ ५ ॥ कान्तस्यमा
 त्रसन्निर्मलदयाः कान्तउद्धान्तः विरुवप्रदा ॥ ५ ॥ कनक २ सुगत
 वन्दनकमलः पुष्पसुमनसः श्रीकृष्णप्रदा ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ५ ॥

त्रिगुणसिद्धिलिङ्गा ॥ त्रिगुणसिद्धिमान् ॥ ॥ उद्दिष्टपुष्पकमलान्नकिन्तल्लिङ्गादवन्तस्य
 २ निर्मलद्वयकनकमयनाथः दहिनल्यवन्दनप्रदा ॥ ५ ॥ पुष्पद
 वशलाशङ्कान्त २ त्रिगुणव्यापितङ्गाङ्गद्वानियाः प्रथमासिद्धिम
 लार्कध्वज ॥ कनकनतनमसिहान २ विरुषिर्गकनकपुष्पवन्दनानि
 २ वामकमलध्वजवन्दनद्वारान्तः सहजानन्दमूर्ति २ सुनत्रयङ्ग
 किन्तनगद्यपूरियात्रः लल्लाटवन्दनः सिन्धुगान्धनिया २ तिसिन्धु

त्रयलु भाऊप्रदाता २ दर्शनप्रापद ४ खहनल २ त्रकावर्धमखनरस
 लावनासर्वलकलसंपूर्ण २ तलषविगाकु गधनि लाकठधन २ मर्ष
 मधुलपुवविजया ॥ कु ॥ २९ ॥ त्रागकड ॥ तालमा ० ॥ पवनकालन
 नीतधनसिमधुल ॥ इयनिकनकावलमध्ववर्णी ॥ कु ॥ नोमिध
 वकसम्बतगावपदकमल श्रीवडवानाहिनालीगा ॥ कु ॥ विद
 वदनदहननयन २ घननसपूनिगसंवतदवत ॥ कु ॥ वि

२ शालिकाली शालीरुवन ही वापयिचउवनत वडुमोनमर्दनी ॥

वहिरुनसाईनिध्वषी मंथितामघनकुं उलकनर ॥ कु ॥ जनकय
 दीपदुर्धमवधम २ भातकोटिघष्ठाभयद्वयकनति ॥ कु ॥ वाडिग
 उमनूधनिगावकीगीरुकु ननपाठगिठल ॥ कु ॥ सनूधिन
 मंदमझासवरेद २ पीयूषपूनिगकनाटक ॥ कु ॥ कनतिस
 प्राप्तासनभिनधनिग २ सद्यहाननभिनमालतर्लविग ॥ कु ॥ सतागुन
 वनलमरु कधनत २ एनतिसुधाहर्षसम्बतगीर् ॥ कु ॥ ३० ॥

त्रागककन॥ तालमः ककाल॥ त्रवनिनिहितवामजानलिसव्यावज्जकित्रल्ल
 सनसन्ना सात्रागदिसमाहर्वधिरयाधम प्रिपुवनत्राया त्रवल्वीत्रा॥ नमामि
 श्रीर्वउमहात्रासलजातमपूनि कुदिता २ विध्वनाधविध्वव्यापिता वीत्र
 विक्रममहाकीधत्राया॥ जातमपूनि कुदिता २ त्रतिहीमल्लउग्रपुर्व
 उर्दधुकत्रायाविश्रुतकित्रल्ल २ यीतिगात्रधनाकेकलनयनावेनिर्मु
 णासात्रासकृष्णत्रल्ल॥ माधवमायापूनीदतवृक्षानूड पिठमवापादरुतना

विनादयंतीवियमवल्लोनी सुकंकल्लचामलचालनन॥ कर्षीदधनासुनवृजपूष्य वनीगल्लयंकथितावनानी॥

॥ समत्रसमायात्रागविभाहस्रनत्रागसीमादितादहा॥ तल्लारुतल्लप्रकल्लिता
 मोलि-कसूत्रनापूत्रनूनकात्रासूत्रनननागम वीदितावत्रल्लत्रायसूत्रध्व
 त्रत्रवल्वीत्रा॥ कृ ॥ ३१ ॥ त्रागवत्रात्रि॥ तालमा० ॥ वामखयतध
 त्रिदहिनकत्रति २ पायत्रनूपूत्रमूउमाल्लस्रिणा॥ कृ ॥ नावयिचकड
 तिबडयागिनी॥ त्रिनिनप्रदविप्रिपुवनप्रविच्छा॥ कृ ॥ स्थलल्लक्ष्मि
 नादविनिर्नरुतदेवी २ गून्यपागुदेवि गून्यनिर्नरुतना॥ कृ ॥ काल्ल

सुधुपरासुन लयधव नीलनिशालवप्रावहन्ति॥ कौतपदापाधनिवशितपिमानान्नगानामरुजीप्रदिष्टा॥ १ ॥

मृग्युदयिषाभलवर्धिया २ त्रागाद्विमोहकत्रागिनकुदिता ॥ कृ ॥ अष्टिसंह
तक्षीतात्रक्षीदेवीभाऊसार्गदेवीपुष्पययिष्ठान्तः ॥ कृ ॥ ३२ ॥ त्रागा
त्रामकनि ॥ तालमा० ॥ कमलविकाशितस्थितिदरासन-कम् दप्रियवर्ध
समंदहा २ वपुत्रवदनकुवलयदलासन-नेत्रप्रकाशिता ॥ ह्रीन ॥ नमामि
श्री श्रीमहामेशश्रीसुकलगुप्तत्रायस्तगुप्त् २ कमलिदहनैप्रकाशिता
सर्वहृद्धाननिधिवरगाता ॥ कृ ॥ प्रथमकरद्वयध्वातितावजघी०

कमलविकीर्ति ३३

मृदामालिङ्गनत्राजिता॥ ३३ ॥ द्वितीयां कृष्णधरातीयहानस्कंधचतुर्थ
खड्गसंवाहनधरा॥ ३४ ॥ उत्तरयुग्याभ्युवनधर्मवापचतुर्थवामध
तापूष्का २ तानमकुटशिरप्रक्षालिताकिलिषनाभानरुचिवता॥ ३५ ॥
निर्वृद्धिवृद्धिहायिनिमिक्तनिता-सर्वरूहानतिधिवनप्रदा-प्रह्वनस
त्रक्षमागात-पत्रमाश्रयजडात्मनि॥ ३६ ॥ त्रागधनाशीतालद्वर्ज
मान॥ गजमुखयिनयनतांगुवमूर्ति-नृत्त्याधियतिगालक्षधरा २ हनम

सिमकूटत्रला एतद्वतात्रसिकित्तससैकाऽभा ॥ क ॥ मात्रियाविघ्नमात्रिया
 दर्पमात्रिया ~~वि~~ विद्वानक्ष २ मात्रियामायामात्रसन्तासा भद्रपमइख
 नाहिता ॥ क ॥ यत्रशुवानीकभवडाहस्कारिषुपानदहिनकात्रा २ मस
 लधनखदीगाधनिबकपालरुलककूवाभे ॥ क ॥ विधिप्रवसुवूट
 गिरसाद्रपशटमसिमहिता २ लम्बकत्रक्षलम्बादत्रसीरापायत्ररिमि
 रिमिवाडने ॥ क ॥ त्रलातत्रध्यात्रलागत्रितामूखीकसखत्रुति

सन्दता २ दीनादत्वात्त्वमसखदाता नमो ॥ सुनमासुगत्सवत्रा ॥ क ॥
 ॥ ३४ ॥ त्रागनामकत्रि ॥ तात्तमा ० ॥ ह्रिदध्वसूताननत्राजीवलोचन ३
 र्गतितात्रक्षकैरासन ॥ क ॥ नमामिष्ठीमदवलाकिर्तेध्वत्रागायालि
 ताप्रित्वध्वत्रा ॥ क ॥ गर्भगायकासात्रवामपासितालवत्रददहिनधय
 ऽभरना ॥ क ॥ मकूटविद्यातितांताभगात्रमनासूतनत्रात्रक्षगाता
 ॥ क ॥ वपुत्रज्ञानतवपुत्रपैवध्वत्रि नयनवर्दितापदपैकई ॥ क ॥

सागुत्रचतस्रमस्तु कधत्रस. एक्षितिसुधार्घ्य एव हूतौ॥ क ॥ ३५॥ **तागा**
 कोलपि॥ तालत्रनमाथ॥ कालयित्रधियाधानामूनित्रकैकोत्राघनकापिधिया
 द्वात्रा २ कत्रलकीयालीधत्रा॥ क ॥ मलयत्रकूइत्रवात्रधिया २ ठि
 ठिमाहिनवात्रहियातहिवाल्ववात्रहिमधमयनालवधयायीया २ रु
 लिकालिजलसालिजलइइत्रवात्रधियायीया २ वउसमकस्तुत्रीणीत्राक
 पूत्रत्रावनयाधिया २ मालिया०० नूनसालिजल २ तहिवाल्ववात्रधिया

धिया २ प्रसलजंताकत्रकशुद्धाशुद्धनमूनियायीया २ नीलसुहृन्नगसदा
 वयीया तहिजसत्रावधप्रधमामिया॥ ३६ ॥ **तागा** न्धत्रहेत्रवि॥ ताल
 चय॥ **प्रि** निश्रयनवतुर्वक्तविहात्रा २ कलद्रवधित्थनसंगलहीमा॥ क॥
 हामकत्रेयाउहामनहिवउमात्रा २ त्रागधषभाहर्वधित्त्रादिया॥ क॥
 वामदहिनकत्रसूत्रवयिपात्रा २ जालिगवजानलत्राद्रुतिकत्रिया॥ क॥
 प्रसुधलउपायित्रवजि २ त्रविषाणिमधुलत्रावार्यवयिधया॥ क॥

व. प्र. ग. सं. ३६

श्रीमद्भाग्य

शकुमात्रा शगदीध्वतशगतगुत्रुवनव्यापिता ॥ क ॥ प्रसक्तधनशुभ
 यत्रमगुत्रनाया २ श्रीधर्मधनुस्थानतपालविरुधिता ॥ क ॥ शगतना
 थशगतनिर्नशननाया २ सर्वशसुविशमत्रदयधितनिर्नशना ॥ क
 ॥ ३२ ॥ रागहेतवि ॥ ताल ॥ नृधनशुभपालदिगीविदिगीपुवनध्वसि
 त्रमात्रवपुत्रघन २ गगल्लोषत्रगगल्लनपूनकात्रागगल्लमात्रध्वन
 वाडियात्र ॥ क ॥ शूननमामिपवत्रा २ जाकिनीपवशवति हानश

किनीशतल्लशगगा ॥ ॥ पूर्वउत्तरपश्चिमदक्षिणवपुत्रुवनवि
 घनमात्रविघनखलियात्रा ॥ वज्रशकिनीधात्रवतालशकिनीचंश
 लशकिनीवपुत्रदेवी ॥ क ॥ सिंधिनीव्याघ्रिनीश्वकडत्राकिनीखट्टी
 गायत्रशुभकृष्णहस्तशकिनीदीप्तिनीवडसिकीवाडिनीधात्रलम्बादत
 काशवदनी ॥ क ॥ शिनशननीदेवीशकिनीपुशयपिशत्रल्लपवम
 दाहत्रल्लविहीया ॥ खपुत्रुवकवज्रघ्न ० खट्टीगयाश २ पुसमामि

दवीशानिष्ठवती॥ क ॥ ४० ॥ त्रिगर्भमात्रमात्र॥ त्रिगर्भमात्र॥ ॥
 याममस्वर्गायपयंककृष्णतर्ह २ हानिष्ठवतिनोमिरवदीवतर्ह॥ क ॥
 नाथर्हनाथर्हर्हनाथस्वर्हनाथर्हर्ह २ दहिभनाथत्रयययर्ह॥ क ॥
 वक्रउकिन्यादिगणयत्रिवतर्ह २ संगसिगमात्रगणरवतर्ह॥ क ॥
 धर्मार्थमनात्रथकवलरतर्ह २ इयात्रसंसात्रश्रुतनिधितर्ह॥ क ॥
 साकात्रनिताकात्रविधनिर्तन २ पृथ्वीगर्भर्हजलमग्निप्रर्हर्ह॥ क ॥

वामानलनलवर्षमाधवकृष्ण २ पूजिगीगववतर्हसगमग्रस्थविने॥
 क ॥ सागुनूवतर्हभिन्नागासुधर्नद २ एनगिष्णीयागर्भवतर्हवर्ह
 नी॥ क ॥ ४१ ॥ त्रिगर्भमात्ररत्रवि॥ त्रिगर्भमात्र॥ पूर्वदिग्ग ॥
 लवः सुगममठभनदविवृक्तयनिर्हसासति २ रत्रवमहाकालगण
 पतिकुमानावीनत्रप्रपालयकयकृष्ण २ पूजियात्रममन्त्रलिवलित
 धितात्रोसथिर्हगिनिमात्रगण २ त्रिगर्भवतर्हत्रिगर्भमठभनद

कुकु ५९९

पुनः
५९९
५९९

तथापि भवगता ॥ कु ॥ उत्तरदिगं वलगा कनकमभनदर्वी नृपा
यधी वषवाहनी ॥ कु ॥ पश्चिमदिगं शुक्ल-कालीकुलमभनद
विष्णुदयसिगाजवाहनि ॥ कु ॥ दक्षिणदिगं शुक्लकर्कशमभनद
विवाताहीमहीमासनि ॥ कु ॥ उत्तरकोलधारा नवकमभनदवि
कोमात्रीमयूतासनि ॥ कु ॥ नेत्रकोललक्ष्मीवर्धमभनदवि
वेष्टवीगन्तुगसनि ॥ कु ॥ वायव्यकोलकिलिकितानामभनद

विचामुप्रतासनि ॥ कु ॥ ॐ भनकानि नृदादहासमभनदवि
महालक्ष्मीर्हिहासनि ॥ कु ॥ ४२ ॥ त्रामकश ॥ गाल ॥ ॥
धर्मत्राजमसनयमत्राजवाहन-मानसीगासनविघ्ननिवातल ॥ यमीगकवीत्र
दक्षकोधहीत्ररथादधिगीत्रमधुलकील ॥ ॥ त्वगप्रथवर्धकधुलक र्ध
लीमपिनयनमम्भुडाहनल ॥ ॥ कूलीममूत्रतर्जनीपाठा-धन
वपुःकननृदादहास ॥ ॥ प्रहीगकप्रहतीवीत्रसीवरा-गलवीत्रासे

धर्मनाड ४३

न्यवीत्रध्वनसहिाप्रभीगकवीत्रविघ्नीगकवीत्रपुलाकविशयबाला
 नलसूर्य॥ ॥ हनूकवदप्रनमाध्व वडाउहीधवर्किं शुंरताशवी
 त॥ ॥ त्रष्टयहत्रर्षीत्रष्टे स्वयंरत्रर्षीं सतातीं अत्रे र्षीं ॥ ॥
 सतागुनूवतलमसुकधतर्षी. रक्षति नूमावयमीगकवीतीं ॥ ॥
 ॥ ४३ ॥ **नागसधमाथाताल** ॥ नमामि २ योगमन्त्र ० ध्वनहान
 उकिनी नूलीगिता २ इतिगहन्धनूतिधवलपुंदहा. हानठाकिनी यत्र

मध्वती॥ ॥ तनाईई २ तनाताई ३ ॥ दहितकत्रध्वनबामधनूर्ध्वत. कु
 वरुगवृक्तकपालधरा २ वडाघी० गिनिलावनसूदतीप्रहसिताक्रीधर्ष
 मत्रवीता॥ ॥ विविधमात्रविघ्नविनाशननू द्विसिद्धिवत्रप्रदायिनी २
 हरीपुरवंगुनिवेधनादनभावयऊगातात्रयीगुं॥ प्रसववदप्रनमागुनूर
 गति. शवीपुरवंगुगिपूल्धपुदं २ अत्रम २ कतापाप्रऊयकत्र. न्नादिवूधयत्र
 मेध्वती॥ क ॥ ४४ ॥ **नागलेनविा नुकतात्वा** ॥ कलिगवजानल

नमामि २ योगमन्त्र ४४

कविगवजानले ५५

श्रीवक्रसर्वत्रहृकात्राहवजिफायवप्रमार्त्त॥ मीसाद्रुतिमयमीससैयूताप
॥ सात्रिमयमीसहृङ्गु॥ ॥ खखरवाहित २ रेणमक्रदहनयवाभियात्र
सत्रलिवलिना २ श्रीवक्रयागिनीजकिनीलामार्वठलोहानूपिषीयश्चया
गिनी २ कृतीसर्वीत्रवीत्रध्वत्रमधुलकत्रभकिलिकिलायमान २ उमा
त्रर्घ्वभध्वनीप्रभादितावाक्रियात्रदानपतिविघ्नविनाशिता २ यागिनीय
॥ देवीसैवमयतात्पत्राहर्वपुष्पुष्टिष्टिया २ मानविनाशनत्र

प्रमादिता ५५

ऊनऊसयत्रात्रलिमासुखरुलभाऊहवीपु २ सर्वसिद्धिवाक्ययद्वाद्राग
नाकनाद्रुतित्राचार्यभक्तचित्सायत्रमाद्रुतिरुलयासिसयत्रात्रनूत्मा
हानसत्त्वभाऊप्रदाता॥ कृ ॥ ४५ ॥ **नागसधूमाथालमाथ॥**
प्रमादितात्रादिदणहमिसूदत्रीहनभत्रमधुलसनस्थितात्रयना २ द्वादश
पुञ्जवउवदनसुल्ललावजवानाहित्रालिंगम्॥ कृ ॥ **हैहैहैहैहै**
दणदिगपुवनमानसयत्रसैवाधियात्र २ द्वादशत्रालिंगमत्रदयसैलाव

नाव पिदाने सैव तताया २ कलिषघघृग रुचर्मविहृषित कनतिउमनू
 गिष्मलधरा २ मार्जपूतसतकपाल खदीगायाभयनशुब्रक शिखधना
 २ पंचजिनवनमकुटजालैके तमटमूडात्रा रतलद शिता आलीकाली
 ३०० आलीरुचापयि व्याघ्रवर्मनिवधनरुपुतान् २ नन शिखमाल आने
 रणीसम्बतदिव्यवशुगिनिकन लहिया २ इतम २ भातू तुशुपयि भन
 लगभर्वतिप्रनमायवदगीता ॥ ४९ ॥ **नागललिता गालरया ॥ व**

वरेववसैधना ५१

एवव संधनापीतावर्तभकमुखविचिग्राहकलहसलीया २ कनकरैधरे
 वामकनधारी दहिनत्रलयमूडाध्वतावितार २ उंवडी एवकैन्नानसा
 गलत्रष्ट उंवजदरुतिष्ठमदिती २ भदनीवडी एववजवधरै विध्वर
 तलसयनः निसानएवकु २ नहहिमागति रुदमर्घपूजाग्रहगवका
 सलपूडिगा २ मीगुलकर्मससाधय २ अभधय २ डीरैन्नखाहा २ नोमि
 श्रीधनइहिगापादानविंदविविधिउपहानपूजयामि २ श्रीभक्तमिहम

५०
ॐ
स
ख
रा
व
म
न
सि
मि

लिमानवलरंजना-देविशीवसंधनामंठललिखामि २ सगुगुत्रवत्र
कमलभिलेगाधत्रिया २ गाय किआवार्य संधसयना २ ह मि ८४
धनविधितास्यरुद्ध-सर्वसुखहियासंमानात्रर्षी॥ कु॥ ४१ ॥ त्रा
गहंयना॥ तालमा०॥ ३ आर्द्र स्वरावमनूतिनीलश्रीमूतसैका४॥ २ खर्वली
वाद्यत्रिनिनयतावानिवदनरुयंकता॥ कु॥ ४२ ॥ वशीमहाकालईकानम
त्रुति॥ अक्षिसिधिवत्रयागा २ कनगिखर्यत्रख पुत्रिष्ठलमानदय सैहानि

ता॥ कु॥ निपूहदयपनिप्रयालीठावाधुवर्ममूषुमाला २ मोलित्र
आख्यशिनवत्रा-४४सनपालितामहावीत्रा॥ कु॥ ४३ ॥ ददुकलाललल्लि
कापूरकटिउर्ध्वकै४४-उर्जगआरनसह पितादहालीआस्यापितारुय
कता॥ कु॥ ४४ ॥ श्रीदेवमहाकालगिधुवनव्यापितादेवासुतनत्रसविता
सगुगुत्रवत्रनशीनागा॥ शिनवत्रसकमलवीदिता॥ कु॥ ४५॥